International Journal of Applied Research 2022; 8(12): 175-177

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2022; 8(12): 175-177
www.allresearchjournal.com
Received: 20-09-2022
Accepted: 25-10-2022

कंचन कुमारी
शोधार्थी, हिन्दी विभाग, वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
कंचन कुमारी
शोधार्थी, हिन्दी विभाग, वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा, बिहार, भारत

प्रियप्रवास के राधा और कृष्ण का लोकोपकारक स्वरूप

कंचन कुमारी

सारांश
'प्रियप्रवास' अयोध्या प्रसाद उपाध्याय जी का महाकाव्य है। इस महाकाव्य में राधा और कृष्ण नई कान्ति लिए गए हैं। राधा के तीन स्वरूप देखने को मिलते है, पहला प्रेमिका का है, दूसरा विरहणी है, तीसरे रूप में लोकोपकारक नायिका है। कृष्ण एक राष्ट्र नेता है जो व्यक्तिगत हित से राष्ट्रहित को उपर रखते हैं। इस शोध प्रबंध में इन दोनों ही पात्रों के लोकोपकारक स्वरूप को चिन्हित करने का प्रयास किया गया है। साथ ही यह भी बताया गया है कि वे कौन–कौन से गुण थे, जिन्होंने इस काव्य को महाकाव्य की श्रेणी में लाकर खड़ा कर दिया।

कूटशब्द : महाकाव्य, प्रेमिका, विरहणी, लोकोपकारक नायिका

प्रस्तावना
व्यक्तित्व और कृतित्वय : हरिऔध जी ने जब हिंदी साहित्य सेवा प्रारंभ की, तब ब्रजभाषा में कविता लेखन की परंपरा थी भक्तिकाल के पश्चात महाकाव्य लेखन की परंपरा कमजोर पड़ गई थी। इस परंपरा को पुनः जीवित करने का कार्य अयोध्या प्रसाद उपाध्याय जी द्वारा किया गया। इन्हें आधुनिक कविता का अग्रदूत माना जाता है।
उपाध्याय जी के पूर्वज दिल्ली में निवास करते थे किन्हीं कारणों से बाद में ये आजमगढ़ के निजामाबाद में रहने लगे अयोध्या प्रसाद उपाध्याय जी के एक पूर्वज पंडित गुरूदयाल उपाध्याय ने व्यक्तिगत कारणों से सीख संप्रदाय में दीक्षा ग्रहण कर ली थी। तत्पश्चात इस परिवार का उपनाम सिंह लिखा जाने लगा। कविवर हरिऔध जी के पिता का नाम भोला सिंह और माता जी का नाम रुक्मिणी देवी था। इनके पिता अनुशासन प्रिय व्यक्ति थे जबकि माता जी धार्मिक महिला थी। हरिऔध जी के चाचा ब्रहम सिंह उच्च कोटि के विद्वान ज्योतिष विद्या के प्रवीण और प्रसिद्ध व्यक्ति थे! हरिऔध जी को बाल्यावस्था में अपनी माता एवं चाचा का संरक्षण प्राप्त था। अतः इन दोनों के व्यक्तित्व का उपाध्याय जी पर गहरा प्रभाव पड़ा। एक ओर उनकी रुचि धार्मिक घटनाओं में रही तो, संस्कृत के प्रति उनका प्रेम सर्वविदित है।
अयोध्या सिंह उपाध्याय जी का जन्म निजामाबाद में 15 अप्रैल 1865 को हुआ था। इनकी प्रारंभिक शिक्षा की व्यवस्था उनके चाचा ने की थी। वर्ष 1879 में प्रथम श्रेणी में वर्नाक्युलर मिडिल परीक्षा उत्तीर्ण की। इससे इन्हें छात्रवृति मिलने लगी। हरि जी उच्च शिक्षा के लिए काशी के किविंल कॉलेज गए। यहाँ रहकर उन्होंने संस्कृत, फारसी, बंगला आदि भाषाओं का अध्ययन किया। अनंत कुमारी से इनका विवाह 17 वर्ष की आयु में हुआ। कानून की शिक्षा प्राप्त करने के कानूनगों के रूप में अपनी सेवा शुरू की। इस पद पर रहते हुए भी हरिऔध जी की काव्य साधना चलती रही। साहित्य सेवाओं से प्रभावित होकर हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने उन्हें अपना सभापति निर्वाचित किया। इनकी प्रमुख कृति प्रियप्रवास पर इन्हें मंगला प्रसाद पारितोषिक सम्मान प्राप्त हुआ।

इनकी दो गद्य रचनाएँ भी मिलती है।
1. अधखिला फूल
2. ठेठ हिंदी का ठाठ

रस कलश नाम की रचना काव्य शास्त्री के रूप में की है। इनका योगदान कवि के रूप में अधिक है। उनके प्रमुख कृतित्व को निम्नांकित ढंग से रेखांकित किया जा सकता है– श्री कृष्ण शतक, प्रेमाम्बु प्रवाह, प्रेमाम्बु प्रसंग, प्रेस प्रपंच, कल्पलता, पारिजात ग्रामगीत बाल वैदेही वनवास, हरिऔध सतसई ।

इनमें से सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रियप्रवास है। इसे आधुनिक काल ओर खड़ी बोली का प्रथम महाकव्य होने का गौरव प्राप्त है। रूप रचना, कथानक, अभिव्यंजना शैली और भाषा आदि की दृष्टि से यह रचना मौलिक एवं महत्वपूर्ण है।

प्रियप्रवास की राधा और कृष्ण का लोकोपकारक स्वरूप श्रीकृष्ण सुयोग्य प्रेमी है वह मथुरा जाकर बहुआयामी कार्यो में उलझ जाते हैं परंतु ब्रजवासी सदैव स्मरण में बने रहते है तभी तो वे उद्धव के माध्यम से अपना संदेश सम्प्रेषित करते हैं। राधा, यशोदा एवं नंद सभी की स्मृति उन्हें व्याकूल करती है। कंस जैसे दुराचारी को मारकर लोकहित कार्य ही किया था। ये ब्रजवासियों के व्याकुलता को अनुभव कर सकते है तभी तो उद्धव को उन्हें सांत्वना देने हेतु भेजते है।

उद्धव कृष्ण के आदेशानुसार सभी गोप–गोपियों को मर्यादानुकूल आचरण का संदेश संप्रेषित करते हैं।

इस काव्य में हिंदी साहित्य के परंपरानुकूल श्री कृष्ण धीरोदात्त नायक है। वे राजपुत्र निराभिमानी है तभी तो ये कहते हैं :–

बढ़ो करो वीर स्वजाति का मलाअपार दोनों विदया लाभ है हमे
किया स्वकर्तव्य उबार जो लिया सुकीर्ति पायी यदि भस्म हो गए।

यहाँ हम कवि की कल्पना और कला कौशल का अनुपम उदाहरण पाते है। एक तरफ अपनी सम्पूर्ण शक्ति का प्रयोग स्वजाति के विकास के लिए करने को कहते हैं तो दूसरी तरफ यह भी कहते है कि यदि हम इस कार्य में सफल नहीं भी हो पाते है तो यश के भागी तो बन जाएँगे। अर्थात कवि द्वारा देशहित में समस्त समर्पण का भाव वक्त किया गया है तत्कालीन परिस्थिति में आवश्यक प्रतीत होता है।

क्षमा नहीं है खल के लिये भली।
समाज – उत्सादक दण्ड योग्य है।
कु – कुर्म – कारी नर का उबारना।
सु – कर्मियों को करता विपत्र है।

वस्तुतः उद्धव ने जो संदेश राधा को दिया वह भोग विलास से दूर रहकर स्वयं के लिए न जीकर दूसरों के दुख संताप को दूर करने में सुख की अनुभूति करने का था। इस जीवन का सच्चा दुख दूसरों की सेवा करना है जो इस महाकाव्य एक महत्वपूर्ण उद्देश्य है वह संप्रेषित किया गया है।

उद्धव के वचन ने राधा को इतना द्रवित किया कि श्री कृष्ण के इस संदेश को इन्होंने शीरोधार्य समझा। राधा इस संदर्भ में स्वयं कहती है मैंने अपने प्रिय के पास बैठकर भक्ति सीखी है। मैं ऐसी चेष्टा करूँगी कि दीन–दुखियों की सेवा करूँगी। साथ ही वह उद्धव को निर्देशित करती है। राधा तो जैसी है ठीक है परन्तु वे अपना पुष्प रूपी मुखड़ा अपने प्रियजन को जरूर दिखाएँ। श्री कृष्ण के पुनरागमन से ब्रजवासी एवं स्वयं श्री कृष्ण को भी अच्छा प्रतीत होगा। साथ ही वह उद्धव को यह भी आश्वस्त करती है कि वह जरूर इस विश्व के काम आएँगी।

काव्य के प्रारंभ में हमें जिस राधा का दर्शन होता है वह एक साधारण प्रेमिका है। उसमें साधारण स्त्री के गुण है लेकिन कथानक विकास के क्रम में वह लोकोपकारक, समाजसेवी, लोकहितकारिणी के रूप में दिखाई देती हैं।

कृष्ण अपने साधारण कार्यों से लोक को प्रसन्निचत रखते हैं। दीनहीनों व संतानहीनों को संतोष देने का प्रयास करते है। वस्तुत वह हमेशा लोक को आनंदित देखना चाहते है। उनका स्वर मृदुल है। ये सदैव लोकहितकारी कार्यो में प्रवृत रहते है। यहाँ कृष्ण का प्रियदर्शी, साहसी, सूरवीर, लोकप्रिय, कर्तव्यपरायण और स्वाभिमानी स्वरूप बहुत ही प्रमुखता से उजागर किया गया है। ये अपने असीम साहस और शौर्य से विकराल और मायायी राक्षसों का वध करते हैं। उनके गुणों का उत्तरोतर विकास होता है। ऐसे आदर्श चरित के लोक नायक कृष्ण राधा को लोक सेवा का संदेश संप्रेषित करते हैं।

इस कथन की पुष्टि हेतु श्री कृष्ण का यह कथन स्मरणीय है जब ये राधा से कहते है कि है. प्रिय जगत में सुख भोग की लिप्साएँ और बहुतसी मनोहारी चीजे है किन्तु इच्छा का उत्सर्ग ही उत्तम गुण है। सेवा भावना की उत्कृष्टता का संदेश पाकर राधा को संतोष की प्राप्ति होती है। इस संदेश प्राप्ति के पश्चात राधा प्रेमातुर अन्य गोपियों को यह बतलाती है कि प्रियतम सर्वव्यापी है। कण–कण में कृष्ण उपस्थित है। अपनी इच्छा कल्पना शक्ति को व्यापक बनाकर राधा कृष्णमयी संसार की सेवा में सर्वस्व समर्पित कर देती हैं।

इस निष्कर्ष पर पहुंचती हूँ कि काव्य के अंत में राधा पूर्णत भिन्न दिखाई देती है। उनके लिए पूरा संसार प्रेममयी हो जाता है और ये इसी सेवा कार्य में स्वयं को वशीभूत कर देती है। महाकाव्य में राधा के तीन रूप दिखाई देते है। यहाँ राधा के चरित्र में भी मानवीय, सहनशीलता, मोह, त्याग, उत्सर्ग एवं बलिदान का सुंदर सामंजस्य स्थापित किया गया है।

इस काव्य में सम सामयिक प्रवृत्तियों का प्रतिबिंब स्पष्ट दृष्टिगोचर है। इस महाकाव्य में कृष्ण के अवतार को एवं राधा को लोकनायक के रूप में प्रस्तुत किया है। राधा कर्म और बुद्धि का उचित समन्वय करती दिखाई देती है। आदर्श की रक्षा करने वाली समाज सेविका हैं।

लोकसेवा को अपने जीवन का उद्देश्य मानती है। उनका व्यवहार कृष्ण के अनुरूप हो जाता है। बड़ों के प्रति आदर करने के लिए दृंढ संकल्पित हो जाती है।

उद्धव के कथनों से यह इतना भावुक हो जाती है कि स्वजनों, खलो दोनों को समान सेवा भाव, शांति और संतोष प्रदान करती हैं। सामान्य शब्दों में यदि हम व्यक्त करना चाहे तो यह कह सकते हैं कि इस काव्य में लोकरंजन के प्रबल प्रणेता श्री कृष्ण है तो नारी राधा है। इस महाकाव्य में नायिका द्वारा आजीवन कौमार्यव्रत का संकल्प कवि को नई उदभावना है जो इस चरित्र की सफलता का अद्वितीय कारण है। राधा के लोक सेविका रूप का तत्कालीन संस्था जैसे आर्य समाज, ब्रहम समाज पर अमिट प्रभाव पडा है। इस संस्थाओं से जुटकर प्रत्येक वर्ग की महिलाओं अपनी अलग पहचान बनाई है। इन संस्थाओं से प्रेरित होकर कई महिलाओं ने स्वहित का त्याग किया और देशहित में कार्य करने की ओर उन्मुख हुई। सावित्री बाई फूले, सरोजनी नायडू इसका अच्छा उदाहरण है।

सत्रवें (अंतिम) सर्ग की राधा में हमें क्रांतिकारी राधा का दर्शन होता है। कवि ने नवजागरण की भावना को अभिव्यक्त करने हेतु इस काव्य की रचना की है। जो इस काव्य की विशिष्टता को प्रकट करती है। अयोध्या प्रसाद उपाध्याय जी की लेखनी की विशेषता है कि इस कृति में राधा कृष्ण के भावों, विचारों एवं कार्यों से तत्कालीन आंदोलनकारियों, समाज सुधारकों के भावों विचारों और कार्य प्रणालियों को अभिव्यक्त करती हैं।

प्रियप्रवास के राधा–कृष्ण युगीन परिस्थितियों के अनुकूल आदर्श नायक–नायिका है। जिसकी कल्पना कवि ने स्वतंत्रता आंदोलन में सहयोगात्म योगदान के उद्देश्य से की थी। इसमें तनिक भी संदेह नहीं है कि पात्रो द्वारा अलग–अलग सगों में जिस भाव को व्यक्त करने का प्रयास किया गया है वह पराधीनता की व्याकुलता, व्यग्रता का उचित बोध कराते हैं। कवि अप्रोक्ष रूप से यह भी कहना चाहते है कि वास्तविक शांति हेतु समग्र प्रयास अथवा एक जुट होकर कार्य करना अत्यंत आवश्यक है तभी हम अपने गंतव्य तक सहजता से पहुच पाएँगे। महाकाव्य में राधा कृष्ण का जो रूप दर्शन हम पाते है। वह तत्कालीन आंदोलनकारी एवं समाजसुधारकों के भावों विचारों एवं कार्य प्रणाली का यथातथ्य चित्रण है। प्रियप्रवास के राधा और कृष्ण युगीन परिस्थितियो के अनुरूप आदर्श नायक नायिका है, जो लोकहित

के लिए प्रत्यत्नशील दिखाई देते हैं। अतः प्रियप्रवासकार ने अपनी मौलिक चिंतन शैली के अनुरूप युगानुकूल पात्र के रूप में राधा–कृष्ण का चयन किया है जो आज भी अनुकरणीय हैं।

संदर्भ

1. प्रियप्रवास– आयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध
2. आधुनिक हिंदी महाकाव्यों में वियोग श्रंगार आलोचना मधुमवन। विमल अहुजा ।
   हरिऔध जी की काव्य शैली
3. मालपुरी आराम एवं संस दिल्ली प्रथम संस्करण
4. हिंदी के आधुनिक प्रतिनिधि कवि, डॉ सुरेश अग्रवाल, अशोक प्रकाशन, न्यू दिल्ली।
5. हिंदी साहित्य का इतिहास, आचार्य राम चंद्र शुक्ल, राजकमल प्रकाशन, लखनऊ।